साहित्यिक कला सौन्दर्य पर बाजारवाद का प्रभाव

लेखक
डॉ. वीणा चौबे,
प्राध्यापक (चित्रकला), शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल,
Email: ……..

सारांश(Abstract):— दुनिया की समस्त कलाओं का विकास मानव सभ्यता के साथ हुआ है। प्रागेतिहासिक काल से लेकर अब तक कलाओं के साथ-साथ लोककला भी निरन्तर विकसित होती रही है व मानव जाति के विकास के साथ-साथ आगे बढ़ रही है। 21वीं शताब्दि में पश्चिम से प्रभावित इस दौर में भी विभिन्न कलाएँ जिनमें चित्रकला भी शामिल है, अपना अस्तित्व बनाए हुए है।

keywords : चित्रांकन, पुराण, सूचना संचार, आधुनिकता, श्रृंगार, मनोवैज्ञानिक

दुनिया की समस्त कलाओं का विकास मानव सभ्यता के साथ हुआ है। प्रागेतिहासिक काल से लेकर अब तक कलाओं के साथ-साथ लोककला भी निरन्तर विकसित होती रही है व मानव जाति के विकास के साथ-साथ आगे बढ़ रही है। 21वीं शताब्दि में पश्चिम से प्रभावित इस दौर में भी विभिन्न कलाएँ जिनमें चित्रकला भी शामिल है, अपना अस्तित्व बनाए हुए है।

वैदिक साहित्य में भी इसके उल्लेख मिलते हैं और रामायण व महाभारत काल में भी इस कला का प्रयोग अनेक रूपों में मिलता है, प्रत्येक राजा-महाराजा के अनेक प्रतीक चिन्ह होते थे, ये चिन्ह राजमुद्रिका के रूप में प्रचलित होते थे। इनको राजाज्ञा और राजकीय आलेखों पर मुद्रित किया जाता था। अत: कलाएँ जीवन में उपजी हैं और जीवन से जुड़े विभिन्न संस्कारों में शामिल हो कर विकसित होती रही हैं। भारतीय साहित्य में घर-आंगन की दीवारों पर स्त्रियों द्वारा चित्रों के उकेरने के उदाहरण मिलते हैं। ये चित्रांकन सौन्दर्यानुभूति के साथ-साथ मांगलिक अभिलाषा, पारस्परिकता एवं सुख- समृद्धि के प्रतीक रूपों में विकसित होते रहे हैं पुराणों में भारत में प्रचलित कलाओं का सागोपांग वर्णन मिलता है। वास्तव में कौकिक या पारलौकिक जीवन के क्षेत्र में प्राचीन भारतीयों ने जो चिन्तन किया या जो उपलब्धियाँ हासिल की थी, उन सबका हमारे पुराण एक प्रकार का विश्वकोष है, भिन्न-भिन्न पुराणों में भिन्न-भिन्न राजवंशों के वर्णन मिलते हैं, जिनसे समयानुसार सौन्दर्यपूर्ण परम्परा के साथ समय की आधुनिकता की जानकारी मिलती है कि हमारे साहित्यिक और कलात्मक हतिहास में वर्णित कला परम्परा का जुडाव किस तरह से रहा है।

मनुष्य अपनी आजिविका चलाने के लिये कोई ना कोई कार्य करता है। ऐसे में वह कला के विषय को लेकर भी अपनी शिक्षा पूर्ण कर अपने जीवन यापन का जरिया बना सकता है। कला के क्षेत्र को अच्छी तरह से देखा जाए तो पता चलता है कि बड़ा व्यापक है। जिसमें भिन्न-भिन्न विषयों को लेकर आगे बढ़ा जा सकता है। इन विषयों को कला साधकों ने वर्गीकृत कर अलग-अलग भागों में बांट दिया है। इस वर्गीकरण में चित्रकला के भी विभिन्न विषय होते हैं जिन्हें उपयोगी कला व ललित कला एवं कारन व चारन कला के नामों से भी पुकारा जाता है। इनमें किसी ने उपयोगी कला को तो किसी ने ललित कला को प्रथम रखा है। जैसे कि हस्तकौशल से जीवन उपयोगी सामग्री तैयार करना शिल्प कहलाता है। इसमें बड़ई, लोहार चर्मकार आदि, जब कलापूर्ण सामग्री बनाते है तो वह उपयोगी कला बन जाति है। इसके साथ ही दूसरी ललितकलाएँ है जिनसे किसी न किसी उद्देश्यपूर्ण कार्य रूपों को आकार दिया जाता है। जैसे भूमि अलंकरण, भित्तिचित्र, राजस्थानी कला, बंगाल की कला, बिहार की कला इसके अलावा कंघी, पंखा, बर्तन, टोकरी, मुखोटे, पुतले वाद्ययंत्र इत्यादि पर चित्रकारी की जाती है।

अत: यह कहा जाता है कि कला निरंतर प्रगतिशील और परिर्वतनशील रही है यह गहरे मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण और संवेदनशील जीवन के उत्थान के लिए आनन्दमयी, सूक्ष्म और असरदार खूबियों से परिपूर्ण है।आधुनिक दौर में सूचना संचार एवं कम्प्यूटरीकृत दौर ने सबकुछ बदल कर रख दिया है। इसने समाज की जीवन शैली के साथ-साथ चिंतन को भी उसकी जड़ों के साथ प्रभावित किया है। पाश्चात्य चकाचौंध ने केवल संसार को ही चमकीला नहीं बनाया है। वरन संस्कृति और कला को भी बदल कर रख दिया है। यह बात और है कि इसकी जड़ों में जिस कला परम्परा का वर्णन निहित है उसमें से इसका विकास हुआ है। इसका मूल कारण है समुचित मानसिकता का बदल जाना। कला का काम सौन्दर्यानुभूति कराना है यह मनुष्य के अन्दर छुपी भावना को आनन्द से भर देती है, कलाओं का मूल उद्देश्य आनन्द की सृष्टि करना होता है। साहित्य में जिस कला का वर्णन मिलता है, चित्रकला को उसने एक दिशा दी है ऐसी दिशा, जो अपनी जमीन, जड़, जीवन और जीवन की सच्चाईयों से जोड़ती है परन्तु आधुनिक मशीनी युग तक पहुंचते-पहुंचते चित्रकला का रूप बहुत मिश्रित हो गया है और उन मिश्रित रूपों को आसानी से पहचानना कठिन हो गया है। इसलिए आधुनिक कला से सारा समाज आनन्द नहीं ले पाता है। ऐसी स्थति में यह आवश्यक हो गया है कि चिगलका की परिभाषा फिर से प्रारम्भ हो, परन्तु वर्तमान समय में चित्रकारों और कलाकारों की आँखों को आधुनिकता और पाश्चात्य चित्रकला ने चकाचौंध कर दिया है जिससे प्रभावित हो कर वे प्रतीकात्मक और लाक्षणिक चित्रकला की और अग्रसर हो रहे हैं इसी को कहते हैं "विड प्राणायाम" अर्थात सीधे नाक न पकड़कर उल्टे नाक पकड़ना। इसके परिणाम स्वरूप वर्तमान में आधुनिक भारतीय चित्रकार परम्परागत प्राचीन भारतीय कला के महानगर को छोड़कर नगर की और दौड़ रहे हैं ।

यूँ तो आधुनिकता के कई रूप है। आज आधुनिकता को ऐसे विचार के रूप में स्वीकारा जा रहा है। जिसका अर्थ सिर्फ फैशन हो गया है। सही मायने में मानसिकता में परिर्वतन आधुनिकता का सबसे प्रिय रूप है। अर्थात 'आधुनिकता को खुलेपन से जोड़ना या जुड़ना होगा, जिसमें सबको स्वीकारने का भाव हो वही सबसे आधुनिक है। आधुनिक और वैचारिक परिवर्तन में जहाँ समाज ने अपने आपको बदला, कला भी उसी रूप में बदलती चली गयी। कला का प्रधान लक्ष्य सौन्दर्य की अनुभूती है चाहे वो किसी भी काल या समय में हो, अब कला में "जैसा है बेसा" की जगह जैसा है वेसा हो गया है और यह भाव आधुनिकता के चलते एक अहम भूमिका निभा रहा है।

भारतीय चेतना में फैशन आधुनिकता से जुड़ा है और इसके अन्त::करण में भी कहीं न कहीं हमारी पुरानी धारणाओं का संचालन रहा है जिसके चलते पुराने को नया रूप देने की कोशिश की गयी है जिनका उदाहरण है कालीदास के काव्य जिनमें सोलह श्रृंगार है इतिहास में ऐसे उदाहरण जिन्हें हम आधुनिक होने के अर्थ में स्वीकार कर सकते हैं। हमारे पुराणों में केवल धार्मिक कथाएँ ही नहीं है ज्ञान-विज्ञान के अपूर्व तथ्यों का भण्डार भी सुरक्षित है वैदिक काल के साहित्य में इसके उल्लेख मिलते हैं। इसीलिए भारत अपनी संस्कृति ओर आस्थाओं के साथ विभिन्न कलाओं के लिए विश्व में जाना जाता है। अतएव कला के अनेक रूप बने और बनते जा रहे हैं। प्राचीन कालों में शायद भारतीयों का सम्बन्ध संसार की और सभ्यताओं से इतना नहीं रहा जितना अब धीरे-धीरे होता जा रहा है,

इसलिए भारतीय सांस्कृतिक और कला दोनों पर उनका प्रभाव पूर्ण रूप से पड़ रहा है। प्राचीन काल में उतना नहीं था यदि आज ऐसी सुविधा है कि देश सभ्यता और कला पर अन्य देशों का प्रभाव पड़े तो यह स्वभाविक है की सभ्यता का विकास अदान-प्रदान पर आधारित है। चित्रकला के क्षेत्र में या और किसी भी कला अथवा विज्ञान के क्षेत्र में प्राय: प्रत्येक सभ्य देश में एक ही प्रकार की धाराएँ आ रही हैं और इन्ही धाराओं में एक धारा आधुनिक परिवेश को धारण किए हुए है। जो फैशन की है और इसका सीधा सम्बन्ध इस बात से भी है की प्रत्येक युग में कला की शैलियों और विषयवस्तु मे परिवर्तन आया है, और परिवर्तन ने कला के स्वरूप को एक नया आयाम दिया है जिसके फलस्वरूप आधुनिक परिवेश मैं फैशन की दुनिया में अपने-आप को स्थान देने के लिए इन्हीं पुरातन शैलियों और विषय को अपनी कला में स्थान दे रहे है इन्हीं का उपयोग और प्रयोग अपने-अपने ढंग से कर रहे हैं जैसे की अजन्ता के समय मै, जो चित्रण हुआ उसके नमूने आज वस्त्रों पर दीवारों पर सजावटी सामान पर, घर, माल, होटल्स व रेस्टोरेंट इत्यादि के 'इन्टीरियर' के लिए प्रयोग कर अंकित किये जा रहे हैं साथ ही उस समय की वैश-भूषा को भी एक नए रूप में अपनाने की कोशिश की जा रही है। चाहे वो अंगवस्त्र हो या कैश विन्यास हो इन सभी को आज का कलाकार अपने- अपने ढंग से इस्तेमाल कर रहे हैं इसी तरह से उस समय में बनी हुई आकृतियाँ पशु, पक्षी, चित्रण अलंकारित आलेखनों को भी वर्तमान परिवेश में प्रयोग में लाया जा रहा है। स्थामितिय या पारम्परिक आलेखनों को भी वर्तमान दौरे की फैशन दौड़ में शामिल किया गया है। इनमें दीवारों की पुताई के साथ-साथ कपड़े चूडियाँ, जूते-चप्पल, जूड़े केपिन्स इत्यादि पर भी ये कला के नमूनों का प्रयोग हो रहा है।

आज आधुनिक युग में विज्ञापन एक वृहद आवश्यकता बन गए हैं, जिनके बिना शायद बाजार और व्यवसाय दोनों अधूरे हैं। यहाँ तक की वर्तमान में राजनीति और जन सामान्य से जुड़ी जीवन की सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं को भी विज्ञापन से जोड़ा जा रहा है। या ये कहें कि जोड़ा जा चुका है और इन क्षेत्रों में कलाकार ने अपनी सृजनात्मजकता और कला कौशल से नवीन प्रयोग कर जैसे, कोलाज, इन्स्टालेशन मिक्स मीडिया, डिजिटल आर्ट, फाईबर ग्लास, मीडिया आर्ट ग्लोइसाईन इत्यादि के अनेक उदाहरण प्रस्तुति है। होती है, उससे भी कला को बहुत योगदान मिलता है। जैसे की जिस भी वस्तु या सामग्री का प्रचार-प्रसार करना है, उसे सुन्दर नमूनों का रूप देकर सुन्दर लिखावट के साथ प्रस्तुत किया जाता है। जिसके लिए केलीग्राफी, लेटर राईटिंग का प्रयोग कर अक्षरों को सुन्दर-सुन्दर रूप देकर सामग्री के साथ प्रस्तुत किया जाता है। पोस्टर विधा के साथ प्रचार-प्रसार को सहज और आसान बनाया जाता है, जिसमें संदेश और उपदेशों को कलात्मकता के साथ रंगों द्वारा दर्शाया जाता है।

ये सब आज बड़ी ही एडवांस स्टेज पर पहुँच चुके हैं और इसका श्रेय कम्प्यूटर को जाता है, जिससे भाषा और कला दोनों पर ही अपना प्रभाव हुआ है। कला के क्षेत्र में चित्रों को मिक्स करने की तकनीक और कट-पेस्ट के द्वारा कई तरह के चित्रों को एक चित्र में प्रस्तुत करने, शब्दों को चयनित कर उनमें रंग भरना, पुराने से नया बनाना, यह सब कार्य कम्प्यूटर के द्वारा ही संभव है, परंतु यह भी अटल सत्य है कि वर्तमान में जो कार्य कम्प्यूटर के द्वारा किया जा रहा है, उसका आधार चित्रकला की एक विधा छापा कला है। जिसके द्वारा रबर की शीट पर अक्षरों से लेकर चित्रों तक को (इन्प्रेलव) कर यानी हल्की परत तक काटकर उभारने की कला के द्वारा किया जाता था, फिर रंगों की सहायता से सतह पर चित्र उभारा जाता था, जोकि प्ली नोकर के नाम से जानी जाने वाली कला है। इसी विधा ने अपने अगले चरण में स्क्रीन प्रिंटिंग का रूप लिया और फिर इस तकनीक ने आज विज्ञान के अविष्कारित उपकरण कम्प्यूटर के रूप में अपना स्थान बना लिया है। जिसके द्वारा कम समय में सभी कार्य जो लीनो या रबर की शीट द्वारा या स्क्रीन प्रिंटिंग द्वारा किए जाते थे, वे इस कम्प्यूटर के द्वारा कम समय में तैयार किए जाते हैं।

आज वैज्ञानिक समय में भावों की अभिव्यक्ति में सृजनात्मकता का बहुमुखी रूप नए-नए प्रयोग में देखने को मिलता है। आज म्यूरल पेंटिंग इन्स्टोलेशन, टेक्सटाइल डिजाइन, फैशन डिजाईनिंग, वस्तु सज्जा, ग्राफिक्स् इत्यादि नवीन विधाओं ने अपना स्थान बना लिया है। इस तरह हमारे देश में भिन्न-भिन्न प्रायोगिक कलाकारों ने जगत के लिए एक प्रेरणा प्रस्तुत की है।

21वीं शताब्दी के पश्चिम से प्रभावित इस दौर में भी कलाएँ अपनी जगह बनाए हुए है। फिर चाहे उसके माध्यम बदल गए हों, लेकिन कलाएँ अपनी जगह, अपनी गहरी पैठ बनाए हुए है। यह बात अलग है कि कला के माध्यम से सौन्दर्य और सौन्दर्य के माध्यम से रसानुभूति की रचना की जाती है। रस, कलाओं की आत्मा होती है। भरतमुनि ने भी जो नाट्यशास्त्र लिखा, उसमें रस की उत्पति और रसानुभूति की बात कही है। वर्तमान दौर में जिस तरह से सबकुछ बदल रहा है, वैसे ही कलाओं की अभिव्यक्ति या शैली या उसके विषय बदल रहे हैं। उपभोक्ता की मांग पर बाजार टिका होता है। यह बात अलग है कि कलाओं के लिए बाजार में कोई जगह नहीं बची है, लेकिन बाजार से यदि सौन्दर्य या कलाओं को हटा लिया जाए तो घाटे में बाजार ही रहेंगे। नव भारत की स्वतंत्र चित्रकला केवल एक कारीगर की भांति कार्य नहीं करना चाहती। प्रस्तुत सर्वप्रथम वह एक दार्शनिक या मनोवैज्ञानिक की भांति काम करने का विचार करता है। अपने जीवन दर्शन को निर्धारित करता है और उसी के अनुसार अपनी साधना का एक लक्ष्य बनाता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक सिद्धान्त निश्चित कर एक अभिनव शैली का अविष्कार करता है। वह केवल परम्परा का सहारा नहीं लेना चाहता, अपितु अपनी बुद्धि विवेक और अनुसन्धान के बल पर कार्य करना चाहता है, इसीलिए आधुनिक चित्रकला में अनेक प्रकार के नए-नए रूप सामने आ रहे हैं।

----------00--------

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, आर.एन. : भारतीय चित्रकला की विवेचना ।
2. वर्मा, अविनाश बहादुर : कोलाश कला, जनवरी 203
3. शुक्ल, रामचन्द्र : आधुनिक चित्रकला का इतिहास।
4. मालवीय, बद्रीनाथ : विष्णु धर्मोत्तर पुराण |
5. वरिश्वर, प्रकाश एवं शर्मा, नूपुर : कला दर्शन, कृष्णा प्रकाशन, मेरठ, पृ. 47-8.
6. कासलीवाल, मीनाक्षी : ललित कला के आधारभूत सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ
7. अकादमी, जयपुर, पृ. 33.

----------00--------